श्री राम चंद्र मिशन
केवल निजी वितरण के लिए
ECHOES
INDIA
जुलै २०१३ खंड ६, अंक ४

मालिक के बारे में खबरें

मई २०१३

पूज्य बाबूजी महाराज के जन्म उत्सव के तुरन्त बाद मालिक पूरी तरह से थक चुके थे। वे थक जाते थे और काफी देर तक विश्राम करते थे। हम सब देख सकते थे कि किस प्रकार उन्होंने अपनी इच्छाशक्ति का प्रयोग करके उत्सव समाप्त होने तक स्वयं को कार्यशील बनाये रखा और बाद में थक गये। उन पर दवाओं और उपचार आदि का प्रभाव था जिस के कारण वे थके हुए और नींद से भरे दिख रहे थे। लेकिन कभी कभी वे तरोताज़ा दिखते थे । उनके स्वास्थ का अनुमान लगाना कठिन था क्योंकि वे किसी दिन स्वस्थ दिखते थे तो अगले ही दिन वे पूरी तरह थके हुए दिखते थे। मालिक के कष्टों को मूकदर्शक बने रहकर देखना बड़ा ही दु:खद था परन्तु हम उनके लिये सिर्फ प्रार्थना ही कर सकते थे ।

मई के प्रथम सप्ताह के अन्त तक मालिक की विकिरण (रेडिएशन) चिकित्सा सामाप्त हो गयी । उनका दर्द कम था परन्तु दवाइयाँ और दर्द निवारक दवाइयाँ अभी ज़ारी थीं । मालिक को ना चलने की सलाह दी गयी थी इस लिये वे व्हीलचेयर पर घूम रहे थे। डॉक्टरों ने उन्हें सलाह दी थी कि जब बहुत आवश्यक हो तब वे वॉकर की सहायता से कुछ ही कदम चलें। इन कारणों से उनकी गतिशीलता में काफी कमी आयी थी, परन्तु उन्होंने इसके साथ सामंजस्य बैठाते हुए एक प्यारी मुस्कान के साथ व्हीलचेयर पर चलना स्वीकार कर लिया था। उन गिने चुने दिनों में जब वे सत्संग के लिये ध्यान कक्ष में आते थे तब उनको व्हीलचेयर पर बैठकर हर्षोल्लास से मुस्कुराते हुए देखा जा सकता था । १२ मई २०१३ को रविवार के दिन मालिक ध्यान कक्ष में आये और सत्संग करवाया जो एक घंटे से अधिक समय तक चला।

मालिक अक्सर शाम को अपनी कुटिया के बाहर निकल आते थे और लगभग एक घंटे तक बाहर बैठते थे, इस प्रकार काफी अभ्यासी मालिक से मिल पाते थे यद्दपि उनसे व्यक्तिगत तौर पर बातचीत करने की अनुमति नहीं थी फिर भी यह उनकी उपस्थिती में शान्ति से बैठने का सुनहरा अवसर होता था। अधिकांश समय वे शान्ति से बैठते थे परंतु कभी कभी वे कुछ बोलते भी थे। कुटिया के सामने बड़े–बड़े वृक्षों पर कई पक्षियों का बसेरा है जो मालिक के बाहर बैठने पर खुशी से चहचहाने लगते हैं।

मई माह के मध्य में मालिक चिकित्सकों से उपचार कराते रहे। जिसमें जाँच और लगातार दवाइयाँ चलती रहीं। जब भी मालिक कोई दवाई लेते थे तो वे पूरी तरह थके हुए दिखते थे।

दूसरी ध्यान देने योग्य बात यह है कि जब उन्हें कोई कार्य करना होता है तो वे अपनी पीड़ा पर ध्यान नहीं देते और उनके चेहरे पर उस पीड़ा के कोई चिन्ह दिखायी नहीं देते। वे अपना कार्य करते रहते हैं और उसे पूरा करते हैं। कार्य पूर्ण होने पर उनकी पीड़ा पुनः दिखाई देती है। इस बार जब उन्होंने उपचार कराया तो आगामी लगभग दस दिनों तक वे काफ़ी थके हुए थे। उन्होंने दिन का अधिकांश समय आराम करने में व्यतीत किया। माह के अन्त में मालिक दर्द से पीड़ित दिख रहे थे ऐसे में मालिक का एम आर आई कराने का निर्णय किया गया। स्कैन के परिणाम अच्छे थे और मालिक तथा सभी डॉक्टरों ने बहुत राहत महसूस की।

मालिक ने एक नई इलेक्ट्रॉनिक कुर्सी ले ली है जो एक बटन की सहायता से ऊपर–नीचे की जा सकती है और मालिक इसे बच्चों की तरह उत्साह से संचालित करते हैं।

माह के अन्त में मालिक का स्वास्थ्य अच्छा था और ज्यों ही वे स्वस्थ हुए उन्होनें प्रशिक्षक सिटिंग्स का अपना प्रथम और अति महत्वपूर्ण कार्य आरम्भ कर दिया। अधिकांश दिनों में वे प्रशिक्षक सिटिंग्स प्रातः जल्दी देते थे और दूसरी व्यक्तिगत सिटिंग किसी अभ्यासी या अभ्यासियों के समूह को नाश्ते के तुरंत बाद देते थे।

एक शाम कॉटेज के प्रांगण में भाई गुरप्रीत सिंह का भजन–सत्र आयोजित किया गया। मालिक कार्यालय में बैठे रहे जबकि अभ्यासी प्रांगण में बैठे। कुछ भजनों के पश्चात् मालिक ने थकान महसूस की और भाई गुरप्रीत को गायन ज़ारी रखने का आग्रह करके लेटने हेतु चले गए।

मंगलवार २८ मई को भाई पी. आर. कृष्णा का ५६वा जन्म दिवस था। मालिक ने उन्हें बधाई दी और आशीर्वाद दिया और फिर कक्ष में उपस्थित सभी को प्रसाद वितरित किया। उस दिन शाम वर्षा हुई और चेन्नई में वातावरण ठंडा हो गया जिससे यह संकेत मिला कि भीषण गर्मियों के दिन समाप्त हो रहे हैं।

प्रातः कॉटेज के बाहर बैठना मालिक की नई दिनचर्या बन गई है। वे प्रातः ५ बजे तक उठते हैं, ५:३० बजे तक बाहर आते हैं और उसके बाद ६:१५ बजे तक अन्दर चले जाते हैं। इसी बीच प्रशिक्षक अभ्यर्थी भी आ जाते हैंऔर तब मालिक प्रशिक्षक सिटिंग प्रारम्भ करते हैं। यह दिनचर्या निरन्तर ज़ारी है विशेषतः इसलिए कि मौसम ठण्डा होना आरम्भ हो गया है । कुल मिलाकर मालिक के स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है और वे अधिक गतिशील हो रहे हैं। उनकी सामान्य दिनचर्या पुनः प्रारम्भ होने लगी है।

जून २०१३

जैसे ही गुरुदेव के स्वास्थ्य में सुधार आया, उन्होंने सभी प्रशिक्षक–सिटिंग्स स्वयं देना शुरु कर दिया। जून १ को गुरुदेव को एक अभ्यासी से अमरीका में निर्मित सर्वप्रथम रेलगाड़ी का नमूना प्राप्त हुआ। गुरुदेव उसकी उत्कृष्टता से प्रभावित हुए और उनकी प्रसन्नता उनके साथ उपस्थित सभी लोगों पर छा गई। गुरुदेव ने उसे खूब सावधानी से सम्भाला और उसे अपनी प्रदर्शन–मंजूषा (शोकेस) में जगह दी हालाँकि वह आकार में थोड़ा बड़ा था।

एल एम ओ आई एस के छात्रों के लिए संगोष्ठी

ओमेगा स्कूल के भूतपूर्व छात्रों के गुटों के लिए एक के बाद एक दो संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं, पहला सत्र जून के प्रथम सप्ताह में और दूसरा द्वितीय सप्ताह के दौरान। इन संगोष्ठियों के संयोजक गुरुदेव से मिले और उन्होंने संगोष्ठी के बारे में अपने कई प्रश्नों के स्पष्टीकरण के लिए एक छोटी परिचर्चा की।

संध्या के समय गुरुदेव कॉटेज के द्वार तक वॉकर लेकर जाते और बाहर पहियेदार कुर्सी पर बैठते थे। इससे उन्हें थोड़ा व्यायाम, ताज़ी हवा और अभ्यासियों से मिलने का अवसर मिलता था जिसका उन्हें हमेशा इन्तज़ार रहता था।

२ जून, रविवार को गुरुदेव ने ध्यान कक्ष में सत्संग संचालित किया जो एक घंटे तक चला। सत्संग के बाद वे कॉटेज वापस आए। क्योंकि वे पिछली शाम को और उसी दिन सुबह कई अभ्यासियों से मिले थे; कॉटेज में कोई ख़ास भीड़ नहीं थी। अभ्यासियों के दिलों में तृप्ति की भावना महसूस की जा सकती थी। ऐसा लग रहा था जैसे गुरुदेव ने सभी के दिलों को 'स्व' से भर दिया हो और हर कोई तृप्त तथा प्रसन्न था। गुरुदेव ने कहा,"आनन्द तृप्ति नहीं देता किन्तु तृप्ति से आनन्द मिलता है।" यह देखा जा सकता था कि गुरुदेव बहुत प्रसन्न थे क्योंकि उन्हें बाहर आए और सत्संग कराए कुछेक सप्ताह हो गए थे।

गुरुदेव ने अपने कार्यालय के कक्ष में अभ्यासियों के एक छोटे समूह के साथ बहुत अच्छा वक़्त गुज़ारा जो एक हँसमुख मिज़ाज में शुरु हुआ और बाद में उन्होंने उसे एक परिचर्चा में परिवर्तित कर दिया।

- आयकर–विभाग में भ्रष्टाचार के बारे में बोलते हुए: आजकल का जीवन केवल लालच और बेईमानी को बढ़ावा देता है।
- डर तुम्हारे पास वह खींच कर लाता है जिससे तुम डरते हो। यह तुम्हारा डर है जो दूसरे पर प्रक्षेपित होता है।
- गुरुदेव का परिवार ही एकमात्र परिवार है जिसमें चार पीढ़ियों के अभ्यासी हैं।

सोमवार जून ३, ओमेगा के भूतपूर्व छात्रों की संगोष्ठी के पहले सत्र का पहला दिन था। गुरुदेव सुबह ९ बजे बाहर आए और उन्होंने सत्संग कराया। सत्संग एक घंटे तक चला और बाद में गुरुदेव ने एक वार्ता दी। अपनी प्रेरणाप्रद वार्ता में उन्होंने भारत में मौजूद भ्रष्टाचार की विभिन्न श्रेणियों का ज़िक्र किया और बताया कि किस प्रकार यह अगली पीढ़ी पर निर्भर करता है कि वह अपने ही नहीं बल्कि देश के भी भविष्य को आकार देने की ज़िम्मेदारी सँभालें। गुरुदेव ने कहा कि इनमें से हरेक छात्र को समाज के दबाव में ही नहीं आना चाहिए बल्कि एक स्थाई मुख्य स्रोत बनकर वे समाज में परिवर्तन ला सकते हैं। गुरुदेव ने कहा कि वे ओमेगा के छात्रों से यही अपेक्षा करते हैं; सिर्फ़ अच्छे अंक पाकर नहीं बल्कि अच्छे और सन्तुलित मानव बनकर बाहर निकलें जो अभिलाषा को महत्त्व देते हों और न कि महत्वाकांक्षा को। उन्होंने फ़िर से इस बात की सच्चाई पर ज़ोर दिया कि पैसा आनन्द या सन्तुष्टि नहीं दे सकता किन्तु सन्तुष्टि आनन्द देती है। फ़िर गुरुदेव ने कुछ अन्य अभ्यासियों को वार्ताएँ देने को कहा। सभी भूतपूर्व छात्र सदस्यों को प्रतिदिन नौ बजे सत्संग के लिए कॉटेज आने के लिए कहा गया।

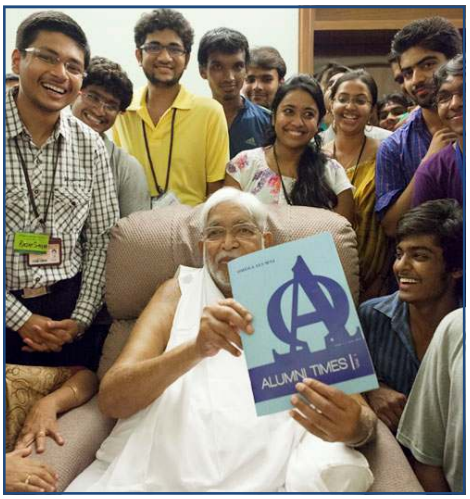

कार्यसमिति की बैठक

बुधवार ५ जून को गुरुदेव सत्संग कराने के लिए तैयार हुए क्योंकि उस दिन सात विवाह करवाए जाने थे। किन्तु चिकित्सकों की सलाह पर उन्होंने कॉटेज में विश्राम किया क्योंकि उन्हें सत्संग के पश्चात कार्यसमिति की बैठक में भी भाग लेना था। भाई कमलेश गुरुदेव के स्थान पर ध्यान–कक्ष गए। गुरुदेव ने कॉटेज में एकत्रित हुए कार्यसमिति के सदस्यों के साथ पूरे समय तक बैठक में भाग लिया। ऐसा पिछले काफ़ी समय से नहीं हुआ था। गुरुदेव बैठक के अन्त में ही भाग लेते रहें हैं। कार्यविवरण का निरीक्षण करने के पश्चात गुरुदेव ने मिशन में हो रही अच्छी बातों पर प्रसन्नता व्यक्त करी, जैसे कि सिंगापुर और कतर में ध्यान–कक्षों का बनना, "इंटरनेशनल बैकेलॉरिएट" प्रदान करने के लिए एल एम ओ आई एस को मान्यता मिलना, तथा प्रशिक्षकों और अभ्यासियों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार होना।

गुरुदेव ने बताया कि भारत में आश्रमों की संख्या तेज़ी से बढ़ रही है, किन्तु खेद व्यक्त किया कि सहज मार्ग को समर्पित कम से कम दो परिवार विभिन्न आश्रमों में रहकर उनकी देखभाल करने को तैयार नहीं हैं। उन्होंने कहा कि उनके पास सेवानिवृत्त अभ्यासियों/प्रशिक्षकों की एक सूची है, किन्तु उनमें से कोई भी वहाँ जाकर रहने को तैयार नहीं हैं जहाँ उनकी आवश्यकता है।

बैठक के समाप्त होने पर गुरुदेव धीरे से अपनी कुर्सी से उठे तथा अपने वॉकर की सहायता से अपने कार्यालय लौट गए। उन्हें कहते हुए सुना गया "जब वह (ईश्वर) पीड़ा देता है, तो शक्ति भी देता है"। वे काफ़ी थक गए थे किन्तु आराम करने जाने से पहले गुरुदेव उन सभी जोड़ों से मिले जिनका उस दिन विवाह हुआ था। उन्होंने सभी को आशीर्वाद दिया, उनसे बातचीत की तथा उनके साथ फ़ोटो भी खिंचवाए।

एल एम ओ आइ एस के विधार्थियों से बातचीत

गुरुदेव ने ओमेगा के भूतपूर्व छात्र सदस्यों के साथ काफ़ी समय बिताया। एक बार करीब ७० बच्चों का समूह गुरुदेव के कार्यालय में था तथा उन्हें चारों ओर से घेर लिया था। कई प्रश्न पूछे गए तथा गुरुदेव ने सभी प्रश्नों का उत्तर बहुत उत्साह से दिया।

एक बहन ने कहा कि सुबह जल्दी उठकर ध्यान करना मुश्किल होता है। गुरुदेव ने कहा "देखिए, मैं हर रात अपने शयन–कक्ष से पक्षियों की आवाजें सुनता हूँ। कभी–कभी मैं एक अकेले पक्षी को सुबह ढ़ाई बजे आधी नींद में चहचहाते हुए सुनता हूँ। करीब साढ़े तीन बजे आधा दर्जन पक्षी गाने लगते हैं तथा पाँच बजे तक वे सभी जाग जाते हैं, गाते हैं, एक दूसरे को पुकारते हैं। इसलिए, आदत डालिए और ऐसा मत कहिए, "सुबह जल्दी उठकर मैं क्या करूँगी"। आपको पता है, अपने दिन का कार्य पूरा करने से पहले मैं सोने नहीं जाता हूँ। मैं कल के लिए कुछ भी छोड़ता नहीं हूँ। कुछ भी नहीं। चाहे वे मेल हो, या पत्र, या सिटिगं। लोग कहते हैं,"आप थके हुए हैं, आप आराम कीजिए," और मैं कहता हूँ,"आराम नहीं। काम खत्म करने के बाद ही मैं आराम करूँगा"। कार्य के बीच में आराम नहीं। काम खत्म करके ही आराम कीजिए। नहीं,नहीं, मैं बहुत थक गया हूँ.....नहीं, आप नहीं थके हैं। यह सिर्फ़ एक बुरी आदत है। अनुशासनहीनता एक बुरी आदत है। अनुशासन एक अच्छी आदत है"।

विवाह के विषय में गुरुदेव ने कहा,"अपनी आँखों को निर्णय मत लेने दो। अपने ह्रदय को तय करने दो। अपने माता–पिता के दबाव में मत आओ। उनसे कहो यह मेरा जीवन है। आपने अपना जीवन जी लिया। मैंने आपसे नहीं कहा था कि आपको किससे विवाह करना चाहिए, इसलिए आप भी मुझे मत बताइए। मेरा ह्रदय जिससे और जब विवाह करने के लिए कहेगा मैं तब करूँगी। जाति या पैसा या और किसी भी तरह का कोई विचार नहीं है और कोई अमिताभ बच्चन नहीं, ठीक है!!!"

एक बहन ने कहा कि वह राजनीति पढ़ना चाहती है। गुरुदेव ने कहा, "राजनीति एक गन्दा विषय है। यह भ्रष्टाचार और बुराईयों, आदि से भरा हुआ है। मुझे कानून पसन्द नहीं है, और राजनीति पसन्द नहीं है। दोनों में आपको झूठ बोलना पड़ता है। 'सत्यम् वद' सम्भव नहीं है। धरमम् चर' सम्भव नहीं है।

मेरी मुलाकात बड़े-बड़े वकीलों, बड़े-बड़े न्यायाधीशों से हुई है और मैंने कहा कि आप लोग झूठ बोलते हो और वकीलों ने कहा कि हम सिर्फ फरियाद का पीछा करते है। वकील न्यायाधीशों की सहायता के लिये होते हैं ताकि न्यायाधीश सही न्याय कर सकें लेकिन वकील सिर्फ फरियादी को जिताने का काम करते हैं। "लड़की ने ज़ोर देकर कहा कि वह पहली ईमानदार राजनीतिज्ञ बनेगी और मालिक ने कहा "तो यदि आप पहली ईमानदार राजनीतिज्ञ बनेगी, आप जल्द ही पायेंगी कि आप सामंजस्य नहीं कर पायेंगी। आज वातावरण ऐसा हो गया है कि किसी में सहनशक्ति नहीं है, आप बाहर फेंक दी जायेंगी।" और फिर उन्होंने कहा "कुछ ऐसा करो जिससे आप खुद की मदद करें, देश की मदद करें। काल्पनिक बाते ना करें। मैं राजनीति को बदलना चाहती हूँ। मैंने एक बार अपने मालिक बाबूजी महाराज से भ्रष्टाचार के बारे में पूछा। उन्होंने कहा सिर्फ ईश्वर ही इसे बदल सकता है। इसकी जड़ें इतनी गहरी और इतनी फैली हुई हैं कि इसे ठीक करना किसी अकेले के बस की बात नहीं है, इसलिये हम प्रार्थना करते हैं। राजनीति को बदलने के लिये आप को राजनीति में होना आवश्यक नहीं है। आप देखें जब तक प्रत्येक व्यक्ति स्वेच्छा से कानून को मानने वाला नही बनता तबतक भ्रष्टाचार खत्म नहीं होगा। जब आप सच बोलते हैं तब कोई आपकी सराहना नहीं करता, लेकिन आप को संतुष्टी होती है कि आप सत्यप्रिय हैं, आप ईमानदार हैं। जैसा मेरे मालिक कहते थे, ईमानदारी स्वयं में इनाम है क्योंकि आज लोग आप से पूछेंगे 'ईमानदार होने से आप को क्या मिला?' मुझे ईमानदार होने से कुछ भी मिलने वाला नहीं है। तो हम वो करते हैं जो हमें करना चाहिए और यही इसका इनाम है।"

एक लड़के ने कहा "मालिक मै अपने पिता के व्यवसाय से जुड़ना चाहता हूँ"। मालिक ने कहा, "हाँ, लेकिन याद रखना, ईमानदारी से किया गया व्यवसाय हमेशा भुगतान करता है। देखो, जैसे ईमानदारी से किया गया निवेश ८%, ९%, १०% देता है परंतु बेईमानी से किया गया निवेश आप को ४०% तक देता है। लेकिन फिर उसमें खतरा है। है कि नहीं? आप अपना पैसा खो सकते हैं, आप बद्नाम हो सकते हैं, आप को जेल जाना पड़ सकता है। तो ईमानदारी बड़े लाभांश का भुगतान नहीं करती लेकिन आपका निवेश सुरक्षित है तो आप आनन्दित जीवन जीते हैं।"

एक लड़के ने कहा "मालिक, मैं क्या करूं यह मैं नहीं जानता"। मालिक ने जवाब दिया, "चिंता मत करो, दरवाज़ा खुलेगा। देखो, जब आप एक रास्ते से जा रहे हो तो आप को चिन्ता की ज़रुरत ही नहीं होती पर उसमें शाखाएं हों और तीन रास्ते हों तो आप विस्मय में पड़ जाओगे कि कौनसा सा रास्ता चुनूं। तो विकल्पों का होना एक समस्या है। जब आप के पास विकल्प होते हैं तो आप सोचते हैं कि यहाँ तीन रास्ते या पांच रास्ते या पंद्रह रास्ते हैं और आप व्याकुल होते हैं, आप को रक्तचाप होता है क्योंकि आप नहीं जानते कि कौन सा रास्ता लेना है। आप अपने दिल में जानते भी हैं, पर यह हमेशा की समस्या है दिल एक तरफ खीचता है और दिमाग दूसरी तरफ। तो, दिमाग को चुप रहने को कहो और दिल की सुनो। आप कभी गलत नहीं चुनेंगे"।

जून के मध्य तक दोनो संगोष्ठियां पूर्ण हो चुकी थीं। मालिक की कुटिया में चीजें फिर सामान्य हो चुकी थीं और मालिक के स्वास्थ्य में सुधार से उनकी सभी अभ्यासियों के लिये उपलब्धता बढ़ गयी थी।

सहज संदेश क्रमांक: २०१३.२६ गुरुवार – ६ जून २०१३

पूज्य मालिक के स्वास्थ्य की नवीन सूचना

प्रिय भाइयों और बहनों,

मालिक के स्वास्थ्य की गत सूचना को लगभग एक माह से अधिक हो चुका है। मालिक पर इलाज का अच्छा प्रभाव हो रहा है और स्वास्थ्य में आशा के अनुरूप सुधार हो रहा है। उनकी हड्डियाँ पहले से अधिक सशक्त हैं और उनकी गतिशीलता बढ़ी है। उनके पूर्ण स्वस्थ होने में लगभग दो महीने लगेंगे।

डॉ. नटवर शर्मा

ओमेगा के भूतपूर्व छात्रों का सम्मेलन

एल एम ओ आइ एस के प्रथम व द्वितीय बैच के लगभग पचहत्तर छात्रों ने जून के प्रथम सप्ताह में सम्मेलन में हिस्सा लिया। नौजवान अभ्यासी, सेमिनार की स्वीकृति के बाद से ही, मालिक से मिलने के लिये उत्सुकतापूर्वक इन्तजार कर रहे थे एवं अंत में उनसे मिलने के बाद उनके हृदयों की प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं थी। प्रथम दिन मालिक ने उन्हें सिटिंग दी व उन्हें सम्बोधित किया। उन्होंने संतोषी एवं ईमानदार होने की आवश्यकता के बारे में बताया। उन्होनें छात्रों को पथप्रदर्शक होने व भारत भविष्य के उनके आभास के उत्प्रेरक, जो कि बिना परिवर्तित हुए परिवर्तन लाता है, होकर अपना हिस्सा निपुणता के साथ पूरा करने के लिये प्रेरणा दी।

दूसरा दिन मास्टर के कॉटेज में प्रात: ९.०० बजे सत्संग से शुरु हुआ जिसके बाद भाई कमलेश पटेल ने एक वार्ता दी जिसमें उन्होंने तीन विषयों के बारे में बताया: चयन, संस्कार एवं संतोष।

अगले तीन दिनों में समन्वयकों व ग्रुप के साथ सत्र आयोजित हुए। उन्होनें विभिन्न बिन्दुओं जैसे कि दैनिक अभ्यास, प्रवृत्ति, सामंजस्य एवं दैनिक जीवन की समस्याओं पर चर्चा की। यह सभी के लिये एक दूसरे के व्यक्तिगत अनुभव व समन्वयकों से सलाह लेते हुए विचार विमर्श द्वारा अपनी कठिनाईयों का समाधान करने का एक खुला मंच था। पाँचवे दिन सहभागियों ने 'वह सेमिनार से क्या लेकर जा रहे हैं' इस विषय पर पूर्ण दल के सामने प्रस्तुति दी। छात्र स्कूल जाकर शिक्षक व अन्य कर्मचारियों से मिले व उन्होंने पूरा दिन उनके साथ व्यतीत किया। भाई पी. आर. कृष्णा व भाई पुनीत लालभाई ने उनके साथ पारस्परिक वार्ता की।

छात्रों ने इस सेमिनार की स्मृति में मालिक के लिये एक छोटा सांस्कृतिक कार्यक्रम तैयार किया था। इसमें कुछ गान व गर्बा नृत्य की प्रस्तुति शामिल थी। भाई कमलेश ने इस प्रश्न "प्राणाहुति का फल क्या है?" के साथ सेमिनार औपचारिक रुप से समाप्त कीया। इसका उत्तर छात्रों को विचार करके अगले वर्ष लाना है।

सांस्कृतिक संध्या के बाद वह मालिक से मिले व उनके साथ एक ग्रुप फोटो कराया। जब वे ग्रुप फोटो ले रहे थे, मालिक ने कहा, "भूतपूर्व छात्र ओमेगा की आत्मा हैं। जो फोटो आप प्रिन्ट करेगें उन पर 'ओमेगा की आत्मा' अनुशीर्षक दीजियेगा।"

अगले दिन कंधों पर जिम्मेवारी एवं दिल में प्रेम, साहस व अगले वर्ष बेहतर तैयारी के साथ आने के अतिरिक्त आश्वासन की हसरत के साथ छात्रों ने वापस जाना आरम्भ किया।

ओमेगा से आकांशा– एक समन्वयक की दृष्टि से

भाई विक्टर कन्नन

हर तरीके के बढ़ते हुए भ्रष्टाचार व इसके प्रति संवेदनशून्यता के इस युग में, ओमेगा स्कूल एवं उसके भूतपूर्व छात्र भविष्य के लिये आशा प्रस्तुत करते हैं। ओमेगा के छात्र अब विपणन संसार की चुनौतियों का, उच्च शिक्षा के अपने नये आवासों के माध्यम से, सामना करने के लिये स्कूल के संरक्षित वातावरण से बाहर भेज दिये गये हैं। वे, बाहरी संसार जो आध्यात्मिक प्रयास व संतुलित जीवन ज़ारी रखने के लिये परवाह करने वाला व सहायक नहीं है, की वास्तविक चुनौतियों का सामना करते हैं। वे नयी स्वतंत्रता एवं बेकार आदतों के नये अवसरों की ओर आकर्षित होने लगते हैं।

अत:, उनको वर्ष में एक बार मणपाक्कम सम्मेलन में लाने का मालिक का प्रयास एक बहुत बढ़िया विचार है एवं इसे क्रमबद्ध ढंग से समझने की ज़रुरत है। यह बड़ों के लिये छात्रों को सुनने व उनकी हालत समझने का अवसर था। यह बड़ों के लिये अपने जवानी के अतिभोग व अस्तव्यस्तता के दिन याद करने व इन विचारों को भूतपूर्व छात्रों के साथ सांझा करने का समय था। इसने उन्हें खुलने, सांझा करने, विश्वास पाने, एवं जल्दी से चिन्तामुक्त व सामान्य होने में सहायता की। अत: वह ज्यादा आत्मविश्वास व दृढ़ निश्चय के साथ वापिस जा रहे हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों में विज्ञान एवं अध्यात्म क्लब, वेबिनार एवं यू कनेक्ट की 'स्वविकास प्रोग्राम' चलाने की शुरुआत द्वारा वैश्विक युवातंत्र का ब्यौरा सांझा करना बहुत सहायक था।

मेरे मत में उन्हें मजबूत करने, उन्हें सहायता देने व स्पष्टता प्रदान करने का उद्देश्य प्राप्त हुआ। तथापि वह एक तात्कालिक उच्चता हो सकती है, और उन्हें लगभग लगातार एक दुसरे से सम्पर्क में रहकर फायदा उठाने की आवश्यकता है। यह उनको दोस्ती से ज्यादा एक बृहद समुदाय में शामिल करके एवं सहज मार्ग की मुख्य धारा में एकीकृत करके करना है। तथापि क्रियाकलापों को अविरत सांझा करने के लिये एक मंच होने से सहायता मिलेगी।

मुझे कार्यक्रम के तीसरे दिन आभास हुआ कि ये अच्छे बच्चे हैं, खरे बच्चे हैं और ये मालिक जिस लिये आये हैं उसके बारे में गहरी परवाह करते हैं। अत: मैं इस जोश के साथ वापिस आया कि अंत में इन बच्चों के माध्यम से हम आशा कर सकते हैं। यदि युवावस्था से ही उनमें अपने व समाज के प्रति जिम्मेवारी की भावना भरी जाये, तो यह एक नये व मजबूत राष्ट्र के निर्माण की आवश्यकता को आगे बढ़ायेगा।

बुजुर्ग अभ्यासियों के लिए परम धाम आश्रम

परम धाम आश्रम को मालिक ने आशीर्वाद स्वरूप अनुमति दे दी है कि अब यहां बुजुर्ग अभ्यासी (६० वर्ष से ऊपर आयु) ठहरकर अपनी साधना कायम रख सकते हैं। इस अवसर का लाभ उठाने के इच्छुक अभ्यासी २–६ महीने ठहरने के लिए आवेदन कर सकते हैं। उन्हें प–र्याप्त आवासीय सुविधा, भोजन एवं अन्य आवश्यक सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। ठहरने का कार्यक्रम अभ्यासी को आवास की उपलब्धता के आधार पर सूचित कर दिया जाएगा। निम्नलिखित लिंक परम धाम की सूचनाएं प्रदान करता है– इसका पता, उपलब्ध सुविधाएं तथा परम धाम में ठहरने के लिए आवेदन पत्र।

http://www.sahajmarg.org/smww/param-dham

कृपया आवेदन पत्र paramdham@srcm.org इस ईमेल पर भेजे।

मिशन के इतिहास में अभ्यासियों की भागीदारी तथा भविष्य के लिए स्रोतों का सृजन

अब तक हमारे अभिलेखागार विभाग ने दस्तावेज़, फोटो, ऑडियो–वीडियो आदि के सुरक्षित भंडारण पर ध्यान केंद्रित किया है। अब हम प्रयास कर रहें हैं कि इसे एक ऐतिहासिक पूर्वाग्रह बनाया जाए ताकि हम ये देख सकें कि रिकार्ड और अन्य माध्यम किस प्रकार इतिहासकारों की उद्देश्यपूर्ण सेवा कर सकतें हैं जो मिशन के इतिहास और सहयोगी संस्थानों पर आज से १०० साल बाद शोध करेंगे। जो चीजें आज हमें नगण्य एवं तुच्छ दिखाई देती हैं वही दशकों बाद शोधकर्ताओं को संस्करणों के रूप में महत्वपूर्ण ज्ञान देंगी।

अब यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि पुराने दस्तावेजों को इक्ट्ठा करें और उन्हें भी नए दस्तावेजों के साथ संरक्षित करें। हमने उन अभ्यासियों को आमंत्रित किया है जिनकी एतिहासिक पृष्ठभूमि हो, जो पुरालेखों की जानकारी रखतें हों या कंप्यूटर कौशल के अतिरिक्त पुस्तकालय विज्ञान की जानकारी रखतें हो उनकी सेवाएं मणपाक्कम में इस प्रकार के अ–भलेखागार के निर्माण के लिए चाहिए। योग्य एवं अनुभवी अभ्यासियों के लिए पूर्णकालिक रोज़गार की पेशकश भी की गई है।

शुरुआत

सैंकड़ों स्वयंसेवक इतिहास पुरालेख के लिए प्राथमिक स्रोत सामग्री एकत्रित करने के लिए केन्द्रों, क्षेत्रों और देशों से आगे आए। उन्होंने पुराने अभ्यासियों से मिशन के विकास और उन्नति के संस्मरणों का साक्षात्कार भी शुरू कर दिया है। इस दौरान गुरुओं द्वारा निभाई गई भुमिका की भी नोंद की जा रही है। क्षेत्रीय इतिहास संयोजक भारत में और बाकी दुनिया के संयोजकों ने एक टीम बना ली है और इस कार्य के क्रियान्वन में विस्तृत दिशा निर्देशों और प्रोटोकॉल की सहायता से नियमित मुद्दों को स्वयंसेवकों के हाथों में सौंप दिया। बेशक ये कार्य कभी समाप्त होने वाला नहीं है क्योंकि दस्तावेज़ों का योगदान, फोटो और कलाकृतियाँ तथा पुरालेख फाइलों का अपडेट तथा मिशन का विकास निरंतर ज़ारी रहेगा।

जो अभ्यासी 'मैक्रो या स्थूल स्तर' पर मिशन के इतिहास पर शोध करना चाहते हैं वे मिशन कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं। इन प्रयासों का भविष्य तभी उज्ज्वल होगा जब अभ्यासी भविष्य में इतिहास के स्त्रोतो को संरक्षित करने के लिए वर्तमान में कार्यरत रहेंगें। ५ जून २०१३ को जब कार्य समिति की बैठक में पूज्य मालिक को इस अभियान के प्रारंभ की जानकारी दी गई तो उन्होंने कहा, "हम वर्तमान में भविष्य के हमारे इतिहास का निर्माण कर रहे हैं।"

नेता का अनुसरण करें

यह गुरुदेव की इस कार्यक्रम को विश्वभर में चलाने की व्यक्तिगत रूचि को दर्शाता है। हमारे मालिक मिशन में केवल अकेले ऐसे हैं जिनके पास भावी पीढ़ी के लिए प्रत्येक दस्तावेज़ उपलब्ध है– चाहे वह उनके गुरु के जीवन संबंधी शिक्षा, यात्राएँ अथवा मालिक का स्वयं का आध्यात्मिक विकास और व्यक्तिगत जीवन हो। उन्होंने पत्राचार और दैनन्दिनी इतिहासकारों की नज़र में इतिहास के स्रोतों को संरक्षित कर रखा है। हम अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि यदि हम सभी अभ्यासी मिशन के इतिहास के उन सभी वर्तमान लम्हों को जो हम अभ्यास के दौरान अनुभव करते हैं दस्तावेज़ के रूप में रखें तो हमारे पास जानकारी की कितनी अमूल्य पूंजी होगी।

आप कैसे मदद कर सकते हैं?

१.यदि आप एक स्वयंसेवक बनना चाहते हैं तो अपने क्षेत्रीय प्रभारी से संपर्क करें जो आपको इतिहास संयोजक के साथ जोड़ देगें।

२.यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो इतिहास संबंधी महत्वपूर्ण सामग्री दे सकता है तो कृपया अपने ज़ोन के इतिहास संयोजक को उसकी जानकारी भेजें।

अधिक जानकारी के लिए कृपया mission.history@srcm.org पर संपर्क करें।

बच्चों का ग्रीष्मकालीन शिविर (कैंप)

वंडरफुल टैन– इंदौर, मध्यप्रदेश

'द वंडरफुल टैन' (अद्भुत दस) इस पुस्तक पर आधारित एक ६ दिवसीय कार्यक्रम, लगभग ४० बच्चों के लिए, इंदौर केन्द्र में आयोजित किया गया। यह पुस्तक हमें कहानी के रूप में ईश्वर की स्मरण में रहना, स्रोतों का सदुपयोग करना, भाईचारे, प्रेम और अनुकम्पा की भावना के साथ जीना सिखाती है। इस पुस्तक का प्रयोग बच्चों को दस नियमों के बारे में बताने के लिए किया गया।

कार्यक्रम का आरंभ एक नाटक से किया गया जिसमें श्रद्धेय बाबूजी महाराज को बच्चों को जीवन को सही तरीके से जीने की शिक्षा देते हुए दर्शाया गया। प्रत्येक दिन सहजमार्ग के दो नियमों के लिए समर्पित था। पुस्तक में सचित्र रूप में दर्शाए गए अनेक मुल्यों को बच्चों तक पहुँचाने के लिए विविध खेलों की संकल्पना और रूपरेखा बनाने में अनेक स्वयं सेवक सम्मिलित थे। बच्चों ने कार्यक्रम का भरपूर आनंद लिया और ऐसा लगता था कि उन पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

विशाखापट्टनम

०७–१७ साल की उम्र के करीब १०० बच्चों के लिए ३ दिन के कार्यक्रम का आयोजन १९–२१ मई के बीच आश्रम में किया गया। शिविर का आरंभ प्रार्थना के बाद परिचय के साथ किया गया। बच्चों को चार समूहों में बाँटा गया। 'ध्यान के फायदे' और 'चरित्र निर्माण' पर सत्र आयोजित किए गए। नेतृत्व की गुणवत्ता, टीम वर्क और गुरुओं के बचपन पर प्रस्तुतियाँ बनाई गई। पेंटिग, हस्तकला, एनिमेटेड (कार्टुन) फिल्में देखना, तर्क–वितर्क सत्र, चाक से परारूप तैयार करना, प्रश्नोत्तरी और आऊट डोर खेल जैसी अनेक गतिविधियां आयोजित की गई। कार्यक्रम के दौरान, युवा स्वयंसेवकों ने आश्रम परिसर की सफाई की। उन्हें ९ बजे की सार्वभौमिक प्रार्थना, डायरी लेखन और रात्रि प्रार्थना के बारे में बताया गया।

शारीरिक व्यायाम और सूर्योदय को निहारना प्रातः चर्या के अंग थे। स्व–अनुशासन, सत्य बोलने का साहस, सुखद स्वभाव एवं सहनशीलता जैसे मूल्यों को अपनाने के लिए बच्चों का मार्ग दर्शन किया गया। कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों तथा स्वयंसेवकों को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। कुछ अभिभावकों ने अभ्यास में रूचि दिखाई तथा कुछ तो मिशन में शामिल भी हो गए। बच्चों ने ग्रीष्म कालीन शिविर में आकर अपनी खुशी एवं उत्सुकता का इज़हार किया।

बच्चों का कार्यक्रम, जलगांव, महाराष्ट्र

जलगांव केन्द्र ने ९ जून २०१३, को जलगांव और नज़दीकी केन्द्रों से आए २६ बच्चों के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का आरंभ प्रार्थना से हुआ। तदोपरांत बच्चों को आऊट डोर खेल के लिए पार्क में ले जाया गया। स्वादिष्ट नाश्ते के पश्चात कहानी सुनाने का सत्र हुआ और फिर एक छोटी प्रस्तुति दी गई। भोजन के पश्चात, बच्चों ने अनेक प्रकार के रंगीन कागज़ों के प्रयोग की कला को सीखा। 'दूरदर्शन का क्या किया जाए?' इस पर एक महत्वपूर्ण परिचर्चा की गई। कार्यक्रम का समापन उपहार वितरण के साथ किया गया। बच्चों ने इसमें बहुत उत्सुकता के साथ भाग लिया।

जलगांव तथा नज़दीकी केन्द्रों से आए ३० अभ्यासियों के लिए एक पूरे दिन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। अनेक विषयों पर एक अनौपचारिक विचार–विमर्श भी किया गया। यह निर्णय भी लिया गया कि २४ जुलाई का उत्सव वारांगांव केन्द्र पर होगा। पूरे दिन के कार्यक्रम का समापन ५ बजे के सत्संग के साथ किया गया।

सीतापुर, उत्तर प्रदेश

सीतापुर केन्द्र द्वारा दिनांक २१ से ३० मई २०१३ तक कक्षा ६ से १२ तक के विद्यार्थियों के लिये बृज किशोर टण्डन मिण्टो देवी बालिका विद्यालय में ग्रीष्म कालीन प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। शिविर का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में आध्यात्मिकता के क्षेत्र में रुचि उत्पन्न कराना था। प्रशिक्षकों ने इन विषयों को शिविर में सम्मिलित किया जैसे जीवन, 'मैं कौन हूँ?, शरीर, मन, बुद्धि, प्रेम, प्रकृति, प्रार्थना, गुरु एवं रचयिता। सामाजिक अभिरुचि के दूसरे विषयों तथा समसामयिक विषयों पर सम्बन्धित क्षेत्रों के विशेषज्ञों द्वारा चर्चा की गयी।

२४ मई के दिन श्री बी बी सिंह– वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सीतापुर द्वारा 'पुलिस आपरेशन फ्रेमवर्क' विषय पर तथा एन सी सी के कर्नल पी एस बिन्द्रा द्वारा 'प्रदूषण और हमारा पर्यावरण' विषय पर दी गयी वार्ताओं ने सभी बच्चों को प्रभावित किया। शिविर का समापन सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरण के साथ हुआ।

अहमदाबाद आश्रम

गुजरात के दोनों ज़ोन के लिये ३१ मई से २ जून तक बच्चों के त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। ७ से १७ वर्ष आयु के लगभग ७५ बच्चों ने इसमें भाग लिया। मिशन के १० नियमों में सम्मिलित सकारात्मक जीवन मूल्यों को आत्मसात करने पर इस में ज़ोर दिया गया। अन्य गतिविधियाँ जैसे गाने सीखना, कला एवं शिल्प, पर्यावरण संरक्षण, क्रीड़ा, खेल, प्रश्नोत्तरी तथा जीवन कौशल शिक्षा इसमें सम्मिलित की गयी थीं। लघु कथाओं और दस उसूलों पर आधारित लघु नाटिकायें प्रस्तुत की गयीं। शिविर के स्वयं सेवकों द्वारा भी दिव्यता द्वारा आत्मा के रूप में जन्म लेते हुए मानव के क्रमिक विकास पर एक नाटक का मंचन किया गया, जिसको सभी के द्वारा सहारा गया।

पन्द्रह स्वयं सेवकों ने विशिष्ट क्रि ाकलाप तथा समूहों की व्यवस्था करने में पूरे समय कार्य किया। अलग अलग समूहों ने शिविर में अनुशासन, समय प्रबन्धन, स्वच्छता एवं संरक्षण पर निगरानी का कार्य किया। विशेष उल्लेखनीय 'नगर धरोहर भ्रमण' कार्यक्रम था, जिसने बच्चों को ६०० साल पुराने अहमदाबाद शहर के इतिहास का दर्शन कराया। शिविर के समापन पर बच्चों ने एक सरल सा फ़ीड बैक प्रपत्र भर कर दिया जिससे पता चला कि उनमें से अधिकांश को शिविर में आनन्द आया तथा बहुत सारी गतिविधियों में उन्हें सीखने को मिला।

पनवेल, मुम्बई

पनवेल आश्रम में लगभग ४५ बच्चों ने १३ से १७ आयु वर्ग में तथा इतने ही बच्चों ने ८ से १२ आयु वर्ग में १७ मई से १९ मई तक तीन दिन के शिविर में भाग लिया। वे निकट के केन्द्रों जैसे पूना, नासिक तथा खोपोली से आये हुए थे। १७ तारीख को बर्फ़ तोड़ने के सत्र से शिविर का शुभारम्भ हुआ जिसके बाद 'आमोद–प्रमोद का अर्थ, 'वितरण का दिव्य तरीका व वितरण का मानवीय तरीका' और 'मैं कौन हूँ' आदि विषयों पर सामूहिक गतिविधियाँ हुईं। युवा वर्ग के अवलोकन स्तर और उनके जवाबों ने प्रशिक्षकों को निरुत्तर कर दिया। सायंकालीन सत्र 'प्रेम उत्पन्न करने तथा ईर्ष्या, पूर्वाग्रह व घृणा की भावना को दूर करने' पर था। रात्रि में सोने से पहले इन किशोरों से अपनी डायरी में लिखने के लिये भी कहा जाता था।

दूसरा दिन योगाभ्यास के साथ जल्दी प्रारम्भ हुआ। यद्यपि एक सत्र 'धन की महत्ता' पर किशोरों के लिये चल रहा था, छोटे बच्चों के समूह के लिये दस नियमों को संख्याओं की मदद से नये रूप में प्रभावशाली तरीके से सम्बद्ध किया गया। इसके बाद बच्चों को प्रोत्साहित करने वाली लघु फ़िल्में दिखाई गयी और उसके बाद एक प्रश्नोत्तर सत्र हुआ। 'सफ़लता की सीढ़ी' सत्र में बच्चे वक्ताओं से भविष्य में अपने कैरियर से सम्बन्धित प्रश्न पूछते हुए नज़र आये। भाई सुदेश त्रिपाठी ने 'अविश्वसनीय भारत' पर तथा '१० अप्रत्याशित वैज्ञानिक खोज' पर वीडियो दिखाये, उसके बाद मनमोहक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम हुआ जिसमें मस्तिष्क को झकझोरने वाले प्रश्न तथा दृष्टि भ्रम की चीजें थीं।

अन्तिम दिन बच्चों को खेलने के लिये निकट के बगीचे में ले जाया गया। बच्चों ने समूहों में गुरुदेव द्वारा बार बार सुनाई कहानियों पर प्रहसन प्रस्तुत किये, जिनके लिये वे पिछली दो रातों से तैयारियाँ कर रहे थे। शिविर का समापन पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ। शिविर का सभी बच्चों ने आनन्द उठाया जैसा उनके फ़ीड बैक से स्पष्ट था।

नई नियुक्तियाँ

भाई के.टी. कृष्णन
केन्द्र–प्रभारी, पालाक्कड़

भाई सी. के. प्रमोद
केन्द्र–प्रभारी, कोची/एर्नाकुलम

भाई पी. के. गोपीनाथ
केन्द्र–प्रभारी, पट्टाम्बी

ज़ोनल युवा संगोष्ठी, भोपाल, म.प्र.

भोपाल आश्रम में ११ व १२ मई को १८ से ३५ आयु वर्ग के युवा अभ्यासियों के लिये दो दिवसीय ज़ोनल युवा संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में विदिशा, भोपाल, गंजबासौदा, होशंगाबाद, इंदौर, जबलपुर, टीकमगड़, बैरासिया, दिल्लौड़, रीवा इत्यादि से आए युवा अभ्यासियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

संगोष्ठी का विषय "सहज मार्ग का जीवन के साथ एकीकरण" रखा गया था। ११ मई को पंजीकरण के उपरांत कार्यक्रम की शुरुआत "संतुलित जीवन" विषय से की गई। दूसरे दिन के कार्यक्रम का केन्द्र बिन्दु "मिलजुल कर कार्य करना" था।

इन दोनों विषयों को विभिन्न गतिविधियों, बातचीत, मालिक के चलचित्र, आत्मनिरीक्षण, सत्रों का कार्यन्वयन, लघु समूह चर्चाएँ, समय–चक्र, विषय–विशेष अध्ययन, लघु –नाटिका व खेलों के द्वारा समझा गया। युवा अभ्यासियों ने इन गतिविधियों में पूरे मन से हिस्सा लेकर मालिक द्वारा निर्मित दिव्य वातावरण का आनंद अनुभव किया।

इस दौरान संतुलित जीवन व मिलजुलकर कार्य करने की कुंजी द्वारा मालिक के साथ अपने तार जोड़े रखने के मूल तत्व को आत्मसार किया गया। संगोष्ठी के उपरांत सभी अभ्यासी बहुत प्रसन्न थे व सभी का यह मत था कि इस तरह के कार्यक्रम पुनः आयोजित होना चाहिए।

रजत जयंती उत्सव, विशाखापट्टनम

इस आश्रम का उद्घाटन १५ मई १९८८ को पू. मालिक ने किया था। इस केन्द्र के अभ्यासियों ने इस अवसर को उत्सव के रुप में मनाने का प्रस्ताव रखा, जिसे पू. मालिक ने अपनी मंजूरी देते हुऐ उचित ढंग से मनाने के निर्देश दिए।

आसपास के बारह उप–केन्द्रों के ६०० से भी ज्यादा अभ्यासियों ने इस उत्सव में भाग लिया, उत्सव ता. १५ मई को प्रातः ९:०० बजे के सत्संग से आरंभ हुआ। यह सत्संग भाई विश्वपती शास्त्री, जो कि १९८८ में यहां के केंन्द्र प्रभारी रह चुके थे, ने करवाया। इस दौरान वे अभ्यासी भाई जो १९८८ से यहां अभ्यास कर रहे हैं, उनके साथ अन्य पदाधिकारियों व स्वयं–सेवकों का अभिनंदन किया गया।

इस उत्सव में केन्द्र प्रभारी भाई के. सप्तमुखुलु ने विशेषकर उन अभ्यासियों को भी आमंत्रित किया जो १९८८ से मिशन से जुड़े तो थे पर बाद में छोड़कर चले गये थे। उन्हीं अभ्यासियों में से करीब ५० अभ्यासियों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया और आश्रम में समय बिताया। इनमें से कुछ ने अभ्यास पुनः शुरु करने में अपनी इच्छा जाहिर की।

वर्ष १९८८ में इस आश्रम के उद्घाटन के दौरान पू. मालिक ने यहां कुछ विषय जैसे "मालिक के साथ संबंध", "हमारे आश्रम का उद्देश्य", व "ध्यान करने की परम आवश्यकता" पर भाषण दिये थे, उन्हीं विषयों को लेकर चर्चाएं की गई।

उत्सव का समापन संध्या ६:३० बजे के सत्संग के साथ हुआ। इस कार्यक्रम के अंशों को स्थानीय तेलगु समाचार–पत्र में प्रकाशित किया गया। यह उत्सव सभी अभ्यासियों के लिये एक अविस्मरणीय दिवस था व सभी ने दिव्यता से भरे इस उत्सव के प्रति अपनी प्रसन्नता व आभार व्यक्त किया।

देवरिया आश्रम, उत्तर प्रदेश

प्रकाश का केन्द्र

देवरिया शहर देवरिया ज़िले का मुख्यालय है और पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थित है। इसकी गोरखपुर से दूरी लगभग ५० किलोमीटर है। साधारणतया 'देवरिया' शब्द का अर्थ ऐसे स्थान से होता है जहाँ पर कई सारे मन्दिर हों। मिशन का देवरिया केन्द्र वर्ष १९९४ में अस्तित्व में आया। भाई रामदास सिंह जो छपरा (बिहार) के प्रशिक्षक थे, देवरिया केन्द्र के शुभारम्भ में सहायक रहे। उनके बार –बार केन्द्र पर आते रहने के कारण ही बाद में भाई अजय तिवारी को केन्द्र का प्रथम प्रशिक्षक बनाने का मार्ग प्रशस्त हुआ। भाई तिवारी के अथक प्रयासों से केन्द्र में अभ्यासियों की संख्या में कई गुना वृद्धि हुई। समाज के सभी क्षेत्रों से लोग मिशन से जुड़ने लगे। ऐसे एक भाई रमा शंकर दीक्षित थे जो बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में गुरुदेव के पुराने सहपाठी रहे थे और अब मिशन के प्रशिक्षक हैं। गुरुदेव १५ अक्टूबर १९९९ के दिन देवरिया से गुजरते हुए कुछ घंटों के लिये यहाँ रुके थे। यद्यपि यह एक बहुत छोटी मुलाकात थी लेकिन वास्तव में यह कुछ क्षण देवरिया केन्द्र के अभ्यासियों के लिये भाग्–यशाली क्षणों में से एक थे।

नियमित रविवारीय सत्संग भाई दीक्षित के घर पर किया जाता था। केन्द्र में अभ्यासियों की बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए अपना एक आश्रम होने की आवश्यकता सभी के द्वारा गहराई से महसूस की गयी। अभ्यासियों की एक समर्पित टीम ने; जिसमें वैद्य पारसनाथ तिवारी, डा० मुरजानी एवं भाई आइ० डी० केडिया सम्मिलित थे; अन्य सभी अभ्यासियों के सहयोग से दिनांक २१ जून २००१ को आश्रम भूमि खरीदने में सहायता की।

आश्रम की भूमि का कुल क्षेत्रफ़ल १.५ एकड़ है और यह देवरिया शहर से करीब ४ किलोमीटर दूर सोनूघाट पर स्थित है। आश्रम का निर्माण १९ मार्च २००६ को प्रारम्भ हुआ। रसोईघर सहित ध्यान कक्ष का आकार ६५ फ़ीट लम्बाई में तथा ४० फ़ीट चौड़ाई में है, जो १०० अभ्यासियों के ध्यान करने के लिये पर्याप्त है। गुरुदेव के निर्देश पर आश्रम का उद्घाटन १६ नवम्बर २००८ को मिशन के सचिव भाई यू एस बाजपेयी द्वारा किया गया। गुरुदेव ने प्रेम पूर्वक इस आश्रम का नाम 'शान्ति आश्रम' रखा है।

विभिन्न आवश्यक सुविधाओं जैसे शौचालय, कार्यवाहक कक्ष सहित आश्रम परिपूर्ण है; साथ ही इसके प्रशान्त सौन्दर्य में वृद्धि के लिये एक छोटा बगीचा भी है। यह आश्रम अभ्यासियों के रात्रि विश्राम करने के लिये भी सुविधाओं से युक्त है। यहाँ लगभग ८० अभ्यासी नियमित रूप से रविवारीय सत्संग में एकत्र होते हैं। वे आश्रम में निकट के केन्द्रों से भाग लेने वाले अन्य अभ्यासियों के साथ उत्सवों को मनाते हैं। रविवारीय सत्संग के अलावा अन्य महत्वपूर्ण कार्यकलाप जैसे अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा निबन्ध लेखन स्पर्धा स्थानीय अभ्यासियों द्वारा आयोजित किये जाते हैं। आश्रम प्रबन्ध कमेटी की भविष्य की योजनाओं में गेटों का निर्माण तथा सौर उर्जा से पूरे आश्रम परिसर को प्रकाशित करना इत्यादि हैं।

गुरुदेव ने हमें यह आश्रम हमारी आध्यात्मिक उन्नति के लिये इतने प्रेम से प्रदान किया है, जिसे पाकर हम वास्तव में धन्य हैं।

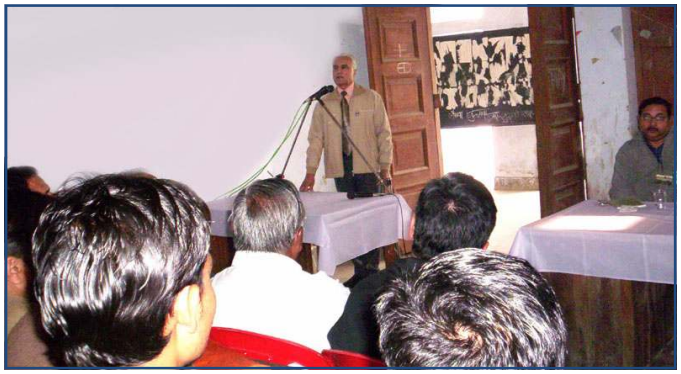

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2013 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.